सिविल सेवा (मुख्य) परीक्षा 2015 के लिए नीति शास्त्र (सामान्य अध्ययन-IV) प्रश्नपत्र की तैयारी : रणनीति तय करना

एस. बी. सिंह

किसी भी प्रतियोगी परीक्षा के लिए तैयारी की अंतिम कसौटी अधिक अंक प्राप्त करना है ताकि सफलता सुनिश्चित की जा सके. सिविल सेवा (मुख्य परीक्षा) का सिलेबस इतना व्यापक है कि किसी भी उम्मीदवार को अपनी तैयारी के अंतिम चरण तक सफलता की नीति तय करनी पड़ती है. सामान्य अध्ययन (जीएस) के चार प्रश्नपत्रों और निबंध प्रश्नपत्र में मिलाकर प्राप्त किए गए अंक मुख्य परीक्षा में चयन का निर्णय करते हैं. इनमें से जीएस प्रश्नपत्र I, II और III में इतिहास, संस्कृति, भूगोल, राजनीति, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, अर्थशास्त्र, विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा आंतरिक सुरक्षा जैसे विभिन्न विषयों का अध्ययन अपेक्षित है, जिससे उच्च अंक प्राप्त करने की संभावनाएं कुछ सीमित हो जाती हैं. सबसे पहली बात यह है कि इन जीएस प्रश्नपत्रों को उनके सिलेबस के संदर्भ में अव्यवस्थित बनाया गया है. दूसरे शब्दों में एक से अधिक विषयों को मिला दिया गया है. उदाहरण के लिए जीएस प्रश्नपत्र-I में आपको इतिहास, भूगोल, संस्कृति और भारतीय समाज का अध्ययन करना पड़ता है, जिसमें सभी विषयों को एक में ठूंस दिया गया है. इसी प्रकार जीएस प्रश्नपत्र-II में राजनीति, शासन, अंतर्राष्ट्रीय संबंध और सामाजिक मुद्दों को मिला दिया गया है. जीएस प्रश्नपत्र-III के अंतर्गत अर्थव्यवस्था, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा और आपदा प्रबंधन जैसे विषय मिला दिए गए हैं. इन जीएस प्रश्नपत्रों का अव्यवस्थित स्वरूप संतुलित तैयारी की अपेक्षा के कारण अंक प्राप्ति को परिसीमित करता है. अतः इन प्रश्नपत्रों अर्थात जीएस I, II और III में उच्च अंक प्राप्त करना एक दुष्कर कार्य है.

दूसरी तरफ नीति शास्त्र, जो मुख्य परीक्षा में जीएस 4 कहलाता है, अव्यवस्थित नहीं है. जीएस I, II और III की भांति यह प्रश्नपत्र विभिन्न विषयों का घालमेल नहीं है. नीतिशास्त्र के प्रश्नपत्र का अर्थ है, केवल नीतिगत अध्ययन. एकल विषय संबंधी सिलेबस होने के कारण इस प्रश्नपत्र की बेहतर तैयारी की जा सकती है. दूसरे यह प्रश्नपत्र तथ्यों और आंकड़ों पर आधारित नहीं है. यह पूरी तरह विश्लेषणात्मक प्रश्नपत्र है और इसमें रोजमर्रा के अनुभव के आधार पर अत्यंत सामान्य प्रश्नों के उत्तर देने होते हैं. हालांकि इसका सिलेबस निर्धारित किया गया है, परंतु, नीतिशास्त्र के प्रश्नपत्र के लिए निर्दिष्ट सिलेबस के शैक्षिक अध्ययन की उतनी आवश्यकता नहीं है. केवल सामान्य रूप रेखा की जानकारी होनी चाहिए और परीक्षा में व्यावहारिक बुद्धि से उत्तर देने चाहिए. पाठ्यपुस्तक आधारित ज्ञान नीतिशास्त्र के प्रश्नों का उत्तर देने में सहायक नहीं होगा. यही वजह है कि सिलेबस को कवर करने का प्रयास करने वाली अधिकतर पुस्तकें और अन्य पाठ्य सामग्री उम्मीदवारों की सहायता करने में संकीर्ण, सीमित और विफल रही है. नीतिशास्त्र के सिलेबस के बारे में कम उजागर तथ्य यह है कि तत्संबंधी प्रश्नों का उत्तर लिखने के लिए विषय की किताबी जानकारी अपेक्षित नहीं है, बल्कि उसका संदर्भित ज्ञान आवश्यक है. अधिकतर सवालों के उत्तर आपको अपने जीवन अनुभवों, व्यापक सामान्य अध्ययन से मिलेंगे न कि कुछ पाठ्य पुस्तकों से. वास्तव में प्रश्न आपके नजरिए की अपेक्षा करते हैं न कि किसी अन्य व्यक्ति के दृष्टिकोण की. अधिकतर प्रश्न

(शेष पृष्ठ 32 पर)

सिविल सेवा ...

(पृष्ठ 1 का शेष)

भौतिक जगत की बजाय उस नैतिक जगत से संबंधित होते हैं, जिसमें मानव वास करता है.

इसलिए, मुख्य परीक्षा में नीति शास्त्र के प्रश्नपत्र को हल करते समय आपको पाठ्य पुस्तक का नजरिया अपनाने की नहीं, बल्कि जमीनी हकीकत, सामान्य ज्ञानात्मक परिप्रेक्ष्य को अपनाने की आवश्यकता पड़ती है. प्रश्नों का उत्तर देते समय निम्नांकित बातों को अवश्य ध्यान में रखा जाना चाहिए:-

1. प्रश्नों का उत्तर देते समय निष्ठा, करुणा, वस्तुनिष्ठता, निष्पक्षता आदि शब्दों का हमेशा ध्यान रखें क्योंकि यह नीतिशास्त्र का प्रश्नपत्र है. दूसरे शब्दों में आपके उत्तर इन शब्दों के इर्द गिर्द होने चाहिए.
2. अपने उत्तर की सटीकता के अनुसार हमेशा किसी महान चिंतक या नेता को उद्धृत करें, जैसे गांधीजी का प्रसिद्ध कथन ''हमारी जरूरत के लिए पर्याप्त है, लेकिन हमारे लालच के लिए नहीं है'' या ''चैरिटी बिगिन्स एट होम'' अर्थात् ''दानवीरता परिवार से प्रारंभ होती है'' आदि.
3. यदि संभव हो, तो स्वयं जीवन में किए गए अनुभव से कुछ उदाहरण दें.
4. अपने उत्तर को हमेशा निजी जीवन, प्रशासन या वातावरण या व्यापार या ऐसे ही अन्य विषयों में नैतिक, नीतिगत संकट के समाधान से जोड़ें क्योंकि प्रश्न इन्हीं मुद्दों के इर्दगिर्द होते हैं.

नीति शास्त्र के प्रश्नपत्र में मामलों का अध्ययन

सिलेबस से निर्धारित किए गए प्रश्नों का उत्तर देने के अलावा आपको कुछ मामलों के अध्ययन के बारे में भी लिखने और उठाई गई समस्याओं का समाधान सुझाने को भी कहा जाता है. केस स्टडी या किसी मामले के अध्ययन का प्रयोजन यह पता लगाना है कि किसी प्रशासनिक, नैतिक या नीतिगत संकट की स्थिति को समझने की आपकी कितनी क्षमता है और आप किस तरह उनका प्रगतिशील समाधान तलाश करते हैं. पिछले 2 वर्षों की मुख्य परीक्षा में पूछे गए मामला अध्ययनों से इस तथ्य का स्पष्ट रूप से पता चलता है कि उनका समाधान करना बहुत अधिक जटिल नहीं था. संघ लोक सेवा आयोग भलीभांति जानता है कि कोई विद्यार्थी किसी मामले का समाधान करने की वास्तविक अधिकारपूर्ण या सत्तात्मक स्थिति में नहीं होता है. अतः मामला अध्ययन में यह अपेक्षा की जाती है कि आप उसे सामान्य अर्थ में कैसे समझते हैं और उसका व्यावाहरिक समाधान कैसे सुझाते हैं. परंतु, किसी मामले के अध्ययन के उत्तर में समाधान से अधिक महत्व उत्तर के ढांचे का होता है. मामले के अध्ययन का उत्तर जीएस प्रश्न का उत्तर देने के समान नहीं होता है. इसलिए मामला अध्ययन से संबंधित प्रश्न का उत्तर देने के लिए फार्मेट भिन्न होना चाहिए. मैं किसी मामला अध्ययन प्रश्न का सर्वाधिक संभावित उत्कृष्ट तरीके से उत्तर देने के संदर्भ में निम्नांकित चरण अपनाने के सुझाव देना चाहूंगा:-

चरण -1: मामले के अध्ययन को कम से कम दो बार पढ़ें ताकि यह समझ सको कि मूलतः वे किस बारे में है. किसी निर्दिष्ट मामला अध्ययन में अनेक तथ्य शामिल होते हैं, परंतु समाधान तलाश करने की दृष्टि से सभी प्रासंगिक नहीं होते हैं.

चरण-2: किसी मामले के ध्यानपूर्वक अध्ययन के दौरान सामने आए प्रमुख तथ्यों को लिख लें. परीक्षक को इस तरह से प्रभावित करें कि आप में मामले के मुख्य तथ्यों को प्रस्तुत करने की योग्यता है.

चरण-3: मामला अध्ययन में प्रमुख बिंदुओं का पता लगाएं जो मामले से संबंधित सामूहिक तथ्यों के परीक्षण से उभरेंगे. ये प्रमुख बिंदु समाधान खोजने में सहायक होंगे.

चरण-4: निम्नांकित सिद्धांतों के आधार पर किसी मामले का समाधान तलाश करें:-

- आपका समाधान व्यावहारिक है या सैद्धांतिक मात्र? व्यावहारिक समाधान सुझाएं.
- समाधान आपके प्राधिकार क्षेत्र के भीतर है या नहीं. दूसरे शब्दों में आप मामले में निर्णय करने के लिए प्राधिकृत हैं अथवा इसका समाधान किसी अन्य प्राधिकरण के अंतर्गत आता है?
- आपके दायित्व की मांग. यह देखें कि क्या यह मामला आपके धारित पद के दायित्व का निवर्हन करने की मांग करता है?
- क्या आपने जो समाधान किया, वह कानून, नियमों और विनियमों के दायरे में है?
- आपके समाधान के संभावित परिणाम क्या हों? क्या समाधान के परिणाम सकारात्मक होंगे अथवा समाधान की बजाए अधिक समस्या पैदा करने वाले होंगे?

चरण-5: यदि किसी मामले के अध्ययन से अधिक विकल्पों का चयन संभव न हो, तो आपको एकल समाधान लिखना होगा और अपनी ओर से विभिन्न समाधान नहीं देने होंगे.

चरण-6: यदि किसी मामले में स्वयं कुछ विकल्प सुझाए गए हों और आपको विकल्प चुनने को कहा गया हो, तो आप सभी विकल्पों के विश्लेषण के आधार पर उनमें से एक या अधिक विकल्प का चयन कर सकते हैं. इसमें आपको एक या अधिक विकल्प चुनने के कारण बताने चाहिएं. यदि आपसे कहा गया हो या छूट दी गई हो, तो आप निर्दिष्ट विकल्पों से परे स्वयं के विकल्प सुझा सकते हैं. यदि आप किसी मामले में सुझाए गए किसी भी विकल्प से सहमत नहीं हों, तो आप कारण बताते हुए सभी विकल्पों को नामंजूर कर सकते हैं, तथा स्वयं का विकल्प सुझा सकते हैं.

आप जो समाधान सुझाते हैं, उसमें आपके व्यक्तित्व के निम्नांकित पहलू अवश्य झलकने चाहिएं:-

1. कि आप संकटपूर्ण स्थितियों में रचनात्मक समाधान प्रदान कर सकते हैं.
2. कि आपके द्वारा सुझाया गया समाधान शीघ्र कार्यान्वित किया जा सकता है.
3. कि आपका समाधान उन नियमों और विनियमों के दायरे के भीतर है, जिनका अनुपालन करने की अपेक्षा आपसे की जाती है.
4. कि आप जटिल स्थितियों में 'मौलिक' समाधान सुझा सकते हैं.
5. कि आप अपने समाधान में निष्ठा, वस्तु निष्ठता, निष्पक्षता के मूल्यों को बनाए रखते हैं.
6. कि आप उचित मामलों में करुणा, सहानुभूति दर्शा सकते हैं.
7. कि आप में सार्वजनिक दायित्व की उच्च भावना है, जिससे आप सार्वजनिक जीवन में प्रतिबद्ध हैं.
8. कि आप सिविल सेवा के बुनियादी मूल्यों को बनाए रखते हैं.

इन सुझावों के साथ ही मैं आपका ध्यान कुछ सामान्य गलतियों की ओर दिलाना चाहूंगा, जो मामला अध्ययन का उत्तर लिखने में अनेक उम्मीदवारों द्वारा किए जाने की आशंका रहती है. समाधान सुझाते समय वे मामला अध्ययन में दी गई जानकारी से बाहर चले जाते हैं और ऐसे समाधान सुझाते हैं जो मामला अध्ययन में अपेक्षित नहीं होते हैं. कुछ उम्मीदवार ऐसे मुद्दे के बारे में दीर्घावधि समाधान सुझा देते हैं, जिनका उल्लेख मामला अध्ययन में नहीं होता है. हमेशा ध्यान रखें कि आपका काम निर्दिष्ट मामले के अध्ययन के संदर्भ में समाधान करना है न कि अन-अपेक्षित समाधान या सुझाव देना. ऐसे समाधान और सुझाव सही हो सकते हैं, लेकिन वे निर्दिष्ट मामला अध्ययन के लिए समुचित नहीं होते हैं.

अंततः, यह हमेशा बेहतर होता है कि नीतिशास्त्र के प्रश्नपत्र में सबसे पहले मामला अध्ययन संबंधी उत्तर दें और सामान्य प्रश्नों को बाद में हल करें. मामला अध्ययन के लिए ताजा दिमाग की आवश्यकता पड़ती है. काफी सोचना पड़ता है और वास्तव में लिखने से पहले रूपरेखा तैयार करनी पड़ती है. अगर आप अंतिम क्षणों में ऐसा करेंगे, तो आप समाधान तलाश करने पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पाएंगे. किसी मामले का अध्ययन जल्दबाजी में करके समाधान नहीं सुझाए जा सकते .

(एस. बी. सिंह एक शिक्षाविद् और आईएएस मेंटर हैं. उनसे संपर्क के लिए ईमेल है - sb_singh2003@yahoo.com)